Vol-13 Special Issue- 1.4 ISSN- 2349-7076

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter)
Patron: Prof. R. G. Kothari
Chief Editor: Prof. Jignesh B. Patel
Email:- Mo. 9429429550 ctefeduinspire@gmail.com

वसुधैव कुटुम्बकम के दार्शनिक पहलु
(अ) :-"वसुधैव कुटुम्बकम कि मूल अवधारणा"
(ब) :-"वर्तमान शिक्षण अधिगम पद्धतियों में वसुधैव कुटुम्बकम के विचारों का समावेश"

नीतू चौधरी
शिक्षा अध्ययन शाला सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय उज्जैन
डॉ. राजीव पंड्या
प्राचार्य
शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय उज्जैन

सारांश

वसुधैव कुटुम्बकम एक प्राचीन भारतीय अवधारणा है, जिसका अर्थ है "वसुधा" (पृथ्वी) को एक "कुटुम्ब" (परिवार) के रूप में मानना। यह अवधारणा हमें सिखाती है कि हम सभी एक ही पृथ्वी के निवासी हैं और हमें एक दूसरे के साथ मिलकर रहना चाहिए।

वसुधैव कुटुम्बकम के प्रमुख पहलू हैं:

एकता और अद्वैत
सर्वभूत हित
अहिंसा और करुणा
सर्वात्मवाद
ब्रह्मांड की एकता

वसुधैव कुटुम्बकम का दार्शनिक दृष्टिकोण हमें सिखाता है कि हम सभी एक ही ब्रह्मांड के हिस्से हैं और हमें अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए एक दूसरे के साथ सहयोग करना चाहिए। वर्तमान शिक्षण पद्धतियों में वसुधैव कुटुम्बकम के विचारों का समावेश करना आवश्यक है, ताकि छात्रों में सामाजिक जिम्मेदारी, सहयोग, और पर्यावरण संरक्षण की भावना विकसित हो सके।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

प्रस्तावना

वसुधैव कुटुम्वकम शब्द महा उपनिषद के छठे अध्याय (सामवेद परम्परा) के मंत्र 72 से लिया गया है। मन्त्र हितोपदेश 1.3.71

"अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसम्

उदराचरितानम् तु वसुधैव कुटुम्भकम्"।

अर्थात यह मेरा है और वह परदेसी - यह संकीर्ण मानसिकना वालों की गणना है। परन्तु उदार हृदय वालों के लिए तो समस्त पृथ्वी एक परिवार के सामान है।

भारतीय दर्शन आदर्श वाक्य 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तथा 'लोकाः समस्ताः सुखिनों भवन्तु' को स्वीकार करता है| 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उल्लेख पहली बार महाउपनिषद में मिलता है, जहाँ यह बताया गया है कि संसार का हर व्यक्ति एक दूसरे से गहरे रूप से जुड़ा है। यह विचार उस समय की भारतीय सोच का प्रतीक था, जिसमें विश्व एकता और सार्वभौमिकता को महत्व दिया जाता था । वैदिक युग में समाज धार्मिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित था, और इस सिद्धान्त ने धार्मिक और भौतिक जीवन के बीच संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

दशर्न यह मानता है, कि सभी मनुष्यों का उद्देश्य एक ही है एक शांतिपूर्ण और समृद्ध समाज का निर्माण करना । इस सन्दर्भ में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' न केवल एक सामाजिक सिद्धान्त है, बल्कि एक साध्यामिक संदेश भी है, जो हमें यह सिखाता है कि हम सभी के बीच कोई सीमा नहीं होनी चाहिए। हम सभी एक ही स्त्रोत से आए हैं। और एक ही लक्ष्य की ओर अग्रसर है। इसलिए, हमें एक-दूसरे का साथ देना चाहिए, सहयोग करना चाहिए और भाई चारे भावना को बढ़ावा देना चाहिए। की 2500 साल पहले लिखी गई तलिक कविता 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (गीत 192, पुराणनुरू, संगम साहित्य) के समान अवधारणा पर तमिल कवि कनियन पून्नुन्द्रनार

"यथुम उरे यावरूम केलिर"

अर्थात " हर जगह मेरा गृह नगर है, सभी मेरे सगे -संबंधी है।

वसुधैव कुटुम्बकम कि मूल अवधारणा

वसुधैव कुटुम्बकम का अर्थ :- संस्कृतः वसुधैव कुटुम्बकम, जिसमें "वसुधा" का अर्थ पृथ्वी, "इव" का अर्थ है, और " कुटुम्बकम" का अर्थ परिवार है। यह एक संस्कृत वाक्यांश है जिसका अर्थ है कि सम्पूर्ण विश्व एक ही परिवार है। विश्व एक छोटे, घनिष्ठ रूप से जुड़े, एकल परिवार के समान है। यह एक ऐसा तथ्य है जो उस समय के वैज्ञानिकों के अवलोकन और विश्लेषण से उभरा और उनकी रिपोर्ट में दर्ज किया गया। ये वैज्ञानिक ऋषि-मुनि थे। उनकी रिपोर्ट उपनिषद थी। प्रत्येक वैज्ञानिक अपने छात्रों के निकट बैठकर स्नेह और देखभाल से शिक्षा देते थे।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :- 'वसुधैव कुटुम्बकम्' "का उल्लेख पहली बार महोपनिषद = (महा + उपनिषद्) सामवेदीय शाखा के अन्तर्गत एक लघु उपनिषद में मिलता है। यह वैष्णव उपनिषद की श्रेणी में आता है। महत् स्वरूप वाला यह उपनिषद, श्री शुकदेवः जी एवं महाराज जनक तथा ऋभू एवं निदाघ के प्रश्नोत्तर के रूप में है। भारतीय संस्कृति का मूलमन्त्र " वसुधैव कुटुम्बकम" इसी उपनिषद में है।

'अयं बन्धुरयंनेति गणना लघुचेतसाम्

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम' ||6-71||

अर्थात - यह बन्धु है, यह बन्धु नहीं है-ऐसी सोच संकुचित चित्त बाले व्यक्तियों की होती है। उदारचरित वाले लोगों के लिए तो यह सम्पूर्ण धरती ही एक परिवार जैसी होती है।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

वसुधैव कुटुम्बकम का दार्शनिक दृष्टिकोण :- दार्शनिक दृष्टिकोण ऐसा दृष्टिकोण है जो जीवन, विश्व और मानवता के बारे में गहराई से सोचता है और समझने की कोशिश करता । यह दृष्टिकोण हमें जीवन के उद्देश्य, अर्थ, और मूल्य के बारे में विचार करने के प्रेरित करता है। दार्शनिक दृष्टिकोण सत्य की खोज करने के लिए प्रेरित करता है, चाहे वह जीवन के बारे में हो, विश्व के बारे में हो, या मानवता के लिए हो । दार्शनिक दृष्टिकोण हमें अपने विचारों को तर्कसंगत और प्रमाणित करने के लिए प्रेरित करता है।

वसुधैव कुटुम्बकम और दर्शन में सम्बन्ध

"मैं" कि भावना का अस्तित्व नहीं :- वसुधैव कुटुम्बकम और दर्शन दोनों में ही "मैं" की भावना का कोई अस्तित्व नहीं है। जब मेरे भीतर का "मैं" अपने अलग शरीर-मन के प्रति सचेत न होकर "वास्तव में जो कुछ भी है" की समग्रता में विलीन हो जाता है। सभी भेद मौर अलगाव विलीन हो जाते है तब केवल एक ही स्पष्ट सत्य शेष रह जाता है। और वह है वसुधैव कुटुम्बकम का भाव ।

स्म्याग्दृष्टि (पूर्ण बोध) :- महान भारतीय दर्शन परम्परा हमे यह स्पष्ट रूप से देखने के लिए प्रेरित करती है दिखने वाले अंतर और अलगाव दर्पण में दिखने वाले 'आभासी प्रतिबिम्ब' के समान हैं। भगवदगीता के 19 वें श्लोक में कहा गया है।

"यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवनुपश्यति ।
सर्वभूतेषु चैतमानं तत्तो न' विजुगुपस्तेः" ।

अर्थात जो सभी प्राणियों को केवल आत्मा में देखता है और सभी प्राणियों में आत्मा को देखता है, वह इस अनुभूति के कारण किसी भी प्रकार का द्वेष नहीं रखता इसका अर्थ है कि यह सभी को स्वयं के समान देखता है। यही एकात्मता की पराकाष्ठा है। कोई भेद नहीं यही वास्तविक वास्तविकता की अनुभूति ही, वसुधैव कुटुम्बकम है।

सहिष्णुता और सह अस्तित्व :- भारतीय दर्शन और वसुधैव कुटुम्बकम की सोच यह भी सिखाती है कि सहिष्णुता और सह-अस्तित्व के बिना समाज में शांति स्थापित नहीं हो सकती। यह विचारधारा यह मानती है कि विभिन्नता का सम्मान और स्वीकृति समाज के लिए अनिवार्य है। इसमें धार्मिक सहिष्णुता, सांस्कृतिक विविधता, और विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच सद्भाव को बढ़ावा देने का महत्व है।

वर्तमान शिक्षण अधिगम पद्धतियों में वसुधैव कुटुम्बकम के विचारों का समावेश

वर्तमान शिक्षण-अधिगम पद्धतियों में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के विचारों का समावेश वैश्विक भाईचारे, सहिष्णुता, और संवेदनशीलता को बढ़ावा देना है। NEP 2020 के तहत, यह दर्शन पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्यों, समावेशी शिक्षा, बहुभाषावाद, पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से छात्रों को एक जिम्मेदार वैश्विक नागरिक के रूप में तैयार करने में सहायक है।

एकता और अद्वैत: "एकं सद् विप्राः बहुधा वदन्ति" अथार्त एक ही सत्य को विभिन्न रूपों में देखा जाता है| वर्तमान शिक्षण पद्धतियों में वसुधैव कुटुम्बकम की समाज में समरमता और एकता की भावना को प्रोत्साहित करना एक स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए सभी को एक साथ मिलकर काम करना होगा, चाहे उनकी जाति, धर्म, भाषा, या सास्कृतिक पृभूमि कुछ भी हो। समाज की विभिषता को स्वीकारना और सम्मान देना ही समरसता की कुंजी है। वर्तमान समय में, जहां समाज में असमानता और भेदभाव की समस्याएँ बढ़ रही हैं, वसुधैव कुटुम्बकम का सिद्धांत समाज में एकता और सहयोग को बढ़ावा देता हैं|

सर्वभूत हित: "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः" :- अर्थात सभी जीव सुखी हों, सभी जीव निरोग हों सेवा का भाव न केवल समाज के लिए लाभकारी है, बल्कि यह हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी अत्यंत

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

महत्वपूर्ण है। जब हम दूसरों की सेवा करते हैं. तो हमारे भीतर करुणा, सहानुभूति, और संतोष का भाव उत्पन होता है, जिससे हमारा मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है। वसुधैव कुटुम्बकम का यह विचार समाज और संसार में शांति, समृद्धि, और ममरसता लाने का भी माध्यम है।

अहिंसा और करुणा: "अहिंसा परमो धर्मः" अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है :- हिंसा से केवल दुख और तबाही ही उत्पन होती है, और इससे समाज में विभाजन और असंतोष बढ़ता है। वसुधैव बुटुम्बकम हमें यह सिखाता है कि जब हम सभी को एक ही परिवार के सदस्य के रूप में देखते हैं, तो हिंसा की कोई जगह नहीं होनी चाहिए। वसुधैव कुटुम्बकम का सिद्धांत हमें शांति, समझौता, और संवाद के माध्यमों को प्राथमिकता देने की प्रेरणा देता है |करुणा केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि समाज और सरकार के स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। जब समाज करुणा को अपने मूल्यों में सामिल करता है, तो वहाँ की नीतियाँ और कार्यक्रम कमजोर और जरूरतमंद लोगों की भलाई के लिए डिजाइन की जाती है।

सर्वात्मवाद: "अयं निजः परो वेति गणना लहुचेतसाम्" (यह मेरा है, यह पराया है, ऐसा सोचने वाले लोग छोटे चित्त वाले होते हैं) वसुधैव कुटुम्बकम का अर्थ है कि पूरी धरती हमारा परिवार है। जब हम इस दृष्टिकोण की अपनाते हैं, तो हम दूसरों को केवल अजनबी के रूप में नहीं देखते, बल्कि अपने परिवार के सदस्य के रूप में देखते हैं। वर्तमान शिक्षण पद्धतियों में इस विचार का समावेश आवशयक है |

ब्रह्मांड की एकता: "यत्र विश्वं भवति एकं नीडम्" (जहाँ विश्व एक ही घर है) :- सुधैव कुटुम्बकम का मूल सिद्धांत एकता पर आधारित है। यह हमें सिखाता है कि हम सभी मानव एक ही वैश्विक परिवार के सदस्य हैं, और हमें एक-दूसरे के साथ सहयोग, समर्थन, और प्रेम का व्यवहार करना चाहिए। एकता का अर्थ यह नहीं है कि हम अपनी पहचान या विविधता को खो दें, बल्कि यह है कि हम सभी के साथ समानता और भाईचारे का व्यवहार करें।

निष्कर्ष

"श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्" ।

महाभारत के अनुसार-

वसुधैव कुटुम्बकम का ध्येय दूसरों के प्रति ऐसा व्यवहार न करना, जो स्वयं अपने आपको रुचिकर न हो, वह ही धर्म है। धैर्य, सहिष्णुता, सत्य, प्रेम, संयम, अपरिग्रह आदि ऐसे सद्गुण हैं, जिनके धारण करने से व्यक्ति का समाज के जीवन के साथ पूर्ण सामंजस्य स्थापित हो सकता है। शिक्षा का प्रथम उद्देश्य ऐसे सद्गुणों को उत्पन्न करना है, जिन पर व्यक्ति, परिवार तथा समाज का कल्याण व हित निर्भर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

बत्रा दीनानाथ (2017)भारतीय शिक्षा का स्वरूप
पाण्डेय रामशकल (1986) शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रिय पृष्ठभूमि
पाठक, आर के (2008) भारतीय परम्परा में शैक्षिक चिंतन